Shane Imam Ahmed Raza (Hindi)

तुझ पे हो रहमत का साया ऐ इमाम अहमद रज़ा
है य दरगाहे ख़ुदा अत्तारे आजिज़ की दुआ

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

शाने इमाम अहमद रज़ा

सफ़्हात 18

(यौमे उ़र्स : 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र)

- दुरूदो सलाम के बारे में तह़क़ीक़े रज़ा 01
- सात पहाड़ 08
- एक घूंट पानी 04
- ख़्वाहिशे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 10
- 12 सुवालात का जवाब 05
- ग़रीब सादात से मह़ब्बते आ'ला ह़ज़रत 13
- आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की चन्द ख़ूबियां 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**शाने इमाम अह़मद रज़ा** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

الحمد للہ رب العلمین والصلوۃ والسلام علی سید المرسلین
اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم بسم اللہ الرحمن الرحیم

शाने इमाम अह़मद रज़ा رحمۃ اللہ علیہ

दुआए अ़त्तार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला “**शाने इमाम अह़मद रज़ा**” पढ़ या सुन ले उसे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم का पड़ोस नसीब फ़रमा । امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे मदनी صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है ।

(معجم اوسط، ۱/۸۴، حدیث: ۲۴۱، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

दुरूदे पाक के बारे में तह़क़ीक़े रज़ा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : येह साबित व वाज़ेह़ है कि हुज़ूरे जाने रह़मत (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) की बारगाहे अक़्दस में दुरुदो सलाम और आ'माले उम्मत की पेशी बार बार ब तक्रार होती है और अह़ादीस की जम्अ़ व तरतीब से मेरे लिये येह ज़ाहिर हुवा कि दुरूदे पाक बारगाहे रिसालत (صلی اللہ علیہ والہ وسلم) में दस बार पेश होता है, दीगर आ'माल पांच बार पेश होते हैं, दरबारे नुबुव्वत में दुरूद पेश होने के चन्द त़रीक़े येह हैं : **(1)** तुरबते अत़्हर (या'नी क़ब्रे मुनव्वर) के पास एक फ़िरिश्ता पहुंचाता है ।

(2) वोह फ़िरिश्ता पेश करता है जो दुरूद पढ़ने वाले के साथ मामूरो मुअक्कल (या'नी मुक़र्रर) है। (3) सैरो सियाह़त करने वाले फ़िरिश्ते पहुंचाते हैं। (4) ह़िफ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते दुरूदे पाक को दिन के तमाम आ'माल के साथ शाम को और रात के आ'माल के साथ सुब्ह़ को पेश करते हैं। (5) हफ़्ते भर के आ'माल के साथ दुरूद शरीफ़ जुमुआ़ के दिन पेश होता है। (6) उ़म्र भर के जुम्ला (या'नी तमाम) दुरूद क़ियामत के दिन पेश करते हैं। (अम्बाउल ह़य्य, स. 287, मुअस्ससतुर्रज़ा) (चन्द बार जो पेश हो चुके वोह मक़ामात येह हैं :) (7) मे'राज की रात आ'माल पेश हुए। (8) हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने नमाज़े कुसूफ़ (या'नी सूरज गहन की नमाज़) में देखे। (9) **अल्लाह** पाक ने जब हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के दोनों कन्धों के दरमियान (अपनी शान के लाइक़) दस्ते मुबारक रखा तो हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर हर चीज़ रोशन (या'नी ज़ाहिर) हो गई। (10) क़ुरआने करीम के नाज़िल होने के वक़्त तमाम अश्या के उ़लूमो मआ़रिफ़ ह़ासिल हुए। (अम्बाउल ह़य्य, स. 357)

अल्लाह अल्लाह तबह़्ह़ुरे इ़ल्मी अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

विलादते आ'ला ह़ज़रत

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की विलादते बा सआ़दत (Birth) बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला जसोली में 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हि. बरोज़ हफ़्ता ब वक़्ते ज़ोह्र ब मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई, आप का नामे मुबारक **मुह़म्मद** है और दादा ने **अह़मद रज़ा** कह कर

पुकारा और इसी नाम से मश्हूर हुए जब कि सने पैदाइश के ए'तिबार से आप का नाम अल मुख़्तार (1272 हि.) है।

(तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 3, मक्तबतुल मदीना)

बचपन शरीफ़ की शानदार झल्कियां

❀ रबीउ़ल अव्वल 1276 हि./1860 ई. को तक़रीबन 4 साल की उ़म्र में नाज़िरा क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमाया इसी उ़म्र में फ़सीह़ अ़रबी में गुफ़्तगू फ़रमाई। ❀ रबीउ़ल अव्वल 1278 हि./1861 ई. को तक़रीबन 6 साल की उ़म्र में पहला बयान फ़रमाया। 1279 हि./1862 ई. को तक़रीबन 7 साल की उ़म्र में रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना शुरूअ़ फ़रमाए। ❀ शव्वालुल मुकर्रम 1280 हि./1863 ई. को तक़रीबन 8 साल की उ़म्र में मस्अलए विरासत (Inheritance Rulings) का शानदार जवाब लिखा। ❀ 8 साल ही की उ़म्र में नह़्व की मश्हूर किताब **हिदायतन्नह़्व** पढ़ी और उस की अ़रबी शर्ह़ भी लिखी। ❀ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1286 हि./1869 ई. को 13 साल 4 माह और 10 दिन की उ़म्र में उ़लूमे दर्सिया से फ़राग़त पाई, दस्तारे फ़ज़ीलत हुई, उसी दिन फ़तवा नवीसी का बा क़ाइदा आग़ाज़ फ़रमाया और दर्सो तदरीस का भी आग़ाज़ फ़रमाया।

आ'ला ह़ज़रत के फ़तावा

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इल्यास क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने हज़ारों फ़तावा तह़रीर फ़रमाए हैं, चुनान्चे जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 13 साल 10 माह 4 दिन की उ़म्र में पहला फ़तवा ''ह़ुर्मते रिज़ाअ़त'' (या'नी दूध के रिश्ते की ह़ुर्मत) पर तह़रीर फ़रमाया तो आप के अब्बूजान मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप की फ़क़ाहत (या'नी आ़लिमाना सलाह़िय्यत) देख कर आप को मुफ़्ती के मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया, इस के बा वुजूद आ'ला

ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه काफ़ी अ़र्से तक अपने अब्बूजान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से फ़तावा चेक करवाते रहे और इस क़दर एह़तियात़ फ़रमाते कि अब्बूजान की तस्दीक़ के बिग़ैर फ़तवा जारी न फ़रमाते। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के 10 साल तक के फ़तावा जम्अ़ शुदा नहीं मिले, 10 साल के बा'द जो फ़तावा जम्अ़ हुए वोह "اَلْعَطَايَا النَّبَوِيَّه فِى الْفَتَاوٰى الرَّضَوِيَّه" के नाम से 30 जिल्दों पर मुश्तमिल हैं और उर्दू ज़बान में इतने ज़ख़ीम (या'नी बड़े बड़े) फ़तावा, मैं समझता हूं कि दुन्या में किसी मुफ़्ती ने भी नहीं दिये होंगे, येह 30 जिल्दें (30 Volumes) तक़रीबन बाईस हज़ार (22000) सफ़ह़ात पर मुश्तमिल हैं और इन में छे हज़ार आठ सो सेंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात, दो सो छे (206) रसाइल और इस के इ़लावा हज़ारहा मसाइल ज़िम्नन ज़ेरे बह़स बयान फ़रमाए हैं। अगर किसी ने येह जानना हो कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कितने बड़े मुफ़्ती थे तो वोह आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़तावा पढ़े, मुतअस्सिर हुए बिग़ैर नहीं रहेगा, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने फ़तावा में ऐसे निकात (या'नी पोइन्ट्स) बयान फ़रमाए हैं अ़क़्ल ह़ैरान रह जाती है कि किस त़रह़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने येह लिखे होंगे। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441, मक्तबतुल मदीना)

किस त़रह़ इतने इ़ल्म के दरिया बहा दिये ज़ुलमाए ह़क़ की अ़क़्ल तो ह़ैरां है आज भी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

एक घूंट पानी

फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुजद्दिदे आ'ज़म आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने एक बार चालीस पेंतालीस दिन तक, 24 घन्टे में एक घूंट पानी के सिवा और कुछ नहीं खाया पिया, इस के बा वुजूद तस्नीफ़, तालीफ़, फ़तवा नवीसी (या'नी किताबें लिखने, फ़तवा देने),

मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने, इर्शादो तल्क़ीन, वारिदीन व सादिरीन (या'नी आने वालों) से मुलाक़ातें वगै़रा मा'मूलात में कोई फ़र्क़ नहीं आया और न ज़ो'फ़ो नक़ाहत (या'नी कमज़ोरी) के आसार ज़ाहिर हुए। (नुज़्हतुल क़ारी, 3/310 तस्हीलन, फ़रीद बुक स्टॉल)

उस की हस्ती में था अ़मल जौहर सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर

आ़लिमे दीन, साहि़बे तक़्वा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

12 सुवालात का जवाब

शैख़ अ़ब्दुल्लाह मिरदाद बिन अह़मद अबुल ख़ैर رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने आ'ला ह़ज़रत (رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ) की ख़िदमत में नोट (या'नी काग़ज़ी करन्सी) के मुतअ़ल्लिक़ 12 सुवालात पेश किये, आप (رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ) ने एक दिन और कुछ घन्टों में उन के जवाबात लिखे और किताब का नाम "كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم" तज्वीज़ फ़रमाया, उ़लमाए मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا जैसे शैख़ुल अइम्मा अह़मद बिन अबुल ख़ैर, मुफ़्ती व क़ाज़ी सालेह़ कमाल, ह़ाफ़िज़े कुतुबे ह़रम सय्यिद इस्माईल ख़लील, मुफ़्ती अ़ब्दुल्लाह सिद्दीक़ और शैख़ जमाल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہِم ने किताब देख कर ह़ैरत का इज़्हार किया और ख़ूब सराहा (या'नी ता'रीफ़ की)। येह किताब मुख़्तलिफ़ प्रेस ने कई बार प्रिन्ट की ह़त्ता कि 2005 ई. में बैरूत लुबनान से भी प्रिन्ट हुई, इस वक़्त येह किताब एक यूनीवर्सिटी के "**एम.ए**" के स्लेबस में भी शामिल है।

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1440)

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ब इत्तिफ़ाक़े उ़लमाए अ़रबो अ़जम चौदहवीं सदी के मुजद्दिद, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ हैं बल्कि मौलाना अश्शैख़ मुह़म्मद बिन अल अ़रबी अल जज़ाइरी

رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने आ'ला ह़ज़रत का तज़्किरए जमील (ख़ूब सूरत ज़िक्र) इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया :

''हिन्दूस्तान का जब कोई आ़लिम हम से मिलता है तो हम उस से मौलाना शैख़ अह़मद रज़ा ख़ां हिन्दी (رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ) के बारे में सुवाल करते हैं, अगर उस ने ता'रीफ़ (Praise) की तो हम समझ लेते हैं कि येह सुन्नी (या'नी सह़ीहुल अ़क़ीदा) है और अगर उस ने मज़म्मत (Criticize) की (बुरा भला कहा) तो हम को यक़ीन हो जाता है कि येह शख़्स गुमराह और बिद्अ़ती है हमारे नज़्दीक येही (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ) कसोटी (Standard) है।'' (अन्वारुल ह़दीस, स. 19, मक्तबतुल मदीना)

जो है अल्लाह का वली बेशक आ़शिक़े सादिक़े नबी बेशक
ग़ौसे आ'ज़म का जो है मतवाला वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, मक्तबतुल मदीना)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत की त़रफ़ पहल करने वाला

इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अह़बाब के शदीद इसरार पर अपने इन्तिक़ाल शरीफ़ से तीन साल क़ब्ल जबल पूर तशरीफ़ ले गए और वहां एक माह क़ियाम फ़रमाया। इस दौरान वहां के रहने वालों ने आप से ख़ूब फ़ैज़ पाया, इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने घरेलू ना चाक़ियों वालों की इस त़रह़ रहनुमाई फ़रमाई कि जो अफ़्राद एक दूसरे से रिश्तेदारी ख़त्म कर चुके थे वोह आपस में सुल्ह़ के लिये तय्यार हो गए। दो भाई आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के मुरीद थे, एक दिन दोनों ह़ाज़िर हुए, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने दोनों की बात सुनने के बा'द येह ईमान अफ़्रोज़ जुम्ले इर्शाद फ़रमाए : ''आप साह़िबों का कोई मज़्हबी तख़ालुफ़ (या'नी मुख़ालफ़त) है ? कुछ नहीं। आप दोनों साह़िब आपस में पीर भाई हैं नस्ली रिश्ता छूट सकता है लेकिन इस्लामो सुन्नत और अकाबिरे सिल्सिला से अ़क़ीदत

बाक़ी है तो येह रिश्ता नहीं टूट सकता । दोनों ह़क़ीक़ी भाई और एक घर के, तुम्हारा मज़्हब एक, रिश्ता एक, आप दोनों साह़िब एक हो कर काम कीजिये कि मुख़ालिफ़ीन को दस्त अन्दाज़ी का मौक़अ़ न मिले । ख़ूब समझ लीजिये ! आप दोनों साह़िबों में जो सब्क़त (या'नी पहल) मिलने में करेगा जन्नत की त़रफ़ सब्क़त करेगा ।'' आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन जुम्लों का फ़ौरन असर ज़ाहिर हुवा, नाराज़ी भुला कर उसी वक़्त एक दूसरे के गले लग गए । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 267 मुलख़्ख़सन, मक्तबतुल मदीना)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बुन्दों का तोह़फ़ा

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक दिन मुफ़्ती बुरहानुल ह़क़ जबल पूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से फ़रमाया : ''मुझे अपनी दो बच्चियों के लिये बुन्दे (Earrings) चाहिएं ।'' मुफ़्ती बुरहानुल ह़क़ जबल पूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हुक्म की ता'मील करते हुए एक मश्हूर दुकान से बुन्दों की बहुत ही ख़ूब सूरत दो जोड़ियां ला कर पेश कर दीं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बुन्दे बहुत पसन्द आए, सामने ही मुफ़्ती बुरहानुल ह़क़ जबल पूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दोनों नन्ही मुन्नी साह़िब ज़ादियां बैठी हुई थीं, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ''ज़रा इन बच्चियों को पहना कर देखता हूं कि कैसे लगते हैं'' येह फ़रमा कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ख़ुद अपने मुबारक हाथों से दोनों बच्चियों को बुन्दे पहनाए और दुआएं अ़त़ा फ़रमाईं । इस के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बुन्दों की क़ीमत पूछी, मुफ़्ती बुरहानुल ह़क़ जबल पूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! क़ीमत अदा कर दी है (आप बस बुन्दे क़बूल फ़रमाइये) । इस के बा'द आप अपनी बेटियों के कानों से बुन्दे उतारने लगे (येह सोच कर कि येह बुन्दे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की साह़िब ज़ादियों के लिये हैं) लेकिन आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़ौरन

इर्शाद फ़रमाया : **"रहने दीजिये ! मैं ने येह बुन्दे अपनी इन्ही दो बच्चियों के लिये तो मंगवाए थे"** इस के बा'द आप ने मुफ़्ती बुरहानुल ह़क़ जबल पूरी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ को बुन्दों की क़ीमत भी अ़ता फ़रमाई ।

(इक्रामे इमाम अह़मद रज़ा, स. 90 मफ़्हूमन, इदारए सऊ़दिया)

सात पहाड़

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ जबल पूर के सफ़र में किश्ती (Ship) में सफ़र फ़रमा रहे थे "किश्ती" निहायत तेज़ जा रही थी, लोग आपस में मुख़्तलिफ़ बातें कर रहे थे, इस पर आप ने इर्शाद फ़रमाया : "इन पहाड़ों को कलिमए शहादत पढ़ कर गवाह क्यूं नहीं कर लेते !" (फिर फ़रमाया :) एक साहि़ब का मा'मूल था जब मस्जिद तशरीफ़ लाते तो सात ढेलों (Stones या'नी पथ्थरों) को जो बाहर मस्जिद के ता़क़ में रखे थे अपने कलिमए शहादत का गवाह कर लिया करते, इसी त़रह़ जब वापस होते तो गवाह बना लेते । बा'दे इन्तिक़ाल मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) उन को जहन्नम की त़रफ़ ले चले, उन सातों ढेलों ने सात पहाड़ बन कर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये और कहा : "हम इस के कलिमए शहादत के गवाह हैं ।" उन्हों ने नजात पाई । तो जब ढेले पहाड़ बन कर ह़ाइल (या'नी रुकावट) हो गए तो येह तो पहाड़ हैं । ह़दीस में है : "शाम को एक पहाड़ दूसरे से पूछता है : क्या तेरे पास आज कोई ऐसा गुज़रा जिस ने ज़िक्रे इलाही किया ? वोह कहता है : न । येह कहता है : मेरे पास तो ऐसा शख़्स गुज़रा जिस ने ज़िक्रे इलाही किया । वोह समझता है कि आज मुझ पर (उसे) फ़ज़ीलत है ।" येह (फ़ज़ीलत) सुनते ही सब लोग ब आवाज़े बुलन्द कलिमए शहादत पढ़ने लगे, मुसल्मानों की ज़बान से कलिमा शरीफ़ की सदा (Sound) बुलन्द हो कर पहाड़ों में गूंज गई ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 313, 314)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ह़दीस शरीफ़ पढ़ाने का अन्दाज़े मुबारक

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ लिखते हैं : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ कुतुबे ह़दीस खड़े हो कर पढ़ाया करते थे, देखने वालों ने हम को बताया कि ख़ुद भी खड़े होते, पढ़ने वाले भी खड़े होते थे उन का येह फ़े'ल (या'नी अन्दाज़) बहुत ही मुबारक है।

(जाअल ह़क़, स. 209, क़ादिरी पब्लीकेशन्ज़)

अमीरुल मुअमिनीन फ़िल ह़दीस

इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ जिस त़रह़ दीगर कई उ़लूम में अपनी मिसाल आप थे, यूंही फ़न्ने ह़दीस में भी अपने ज़माने के उ़लमा पर आप को ऐसी फ़ौक़िय्यत (Precedence) ह़ासिल थी कि आप के ज़माने के अ़ज़ीम आ़लिम, 40 साल तक दर्से ह़दीस देने वाले शैख़ुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रत अ़ल्लामा वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ ने आप को "अमीरुल मुअमिनीन फ़िल ह़दीस" का लक़ब दिया।

(माहनामा अल मीज़ान, बम्बई, इमाम अह़मद रज़ा नम्बर एप्रिल, मई, जून 1976 ई., स. 247)

इ़ल्म का चश्मा हुवा है मोजज़न तह़रीर में   जब क़लम तू ने उठाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

मदीने से मह़ब्बत

मुबल्लिग़े इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़लीम सिद्दीक़ी मेरठी رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ ह़रमैने त़य्यिबैन زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से वापसी पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और निहायत ख़ूब सूरत आवाज़ में आप की शान में मन्क़बत पढ़ी तो सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللہِ عَلَیْہ ने इस पर कोई ना गवारी का इज़्हार नहीं फ़रमाया बल्कि इर्शाद फ़रमाया : मौलाना ! मैं आप की ख़िदमत में क्या पेश करूं ? (अपने बहुत क़ीमती इमामे (Turban) की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया :) अगर इस

इमामे को पेश करूं तो आप उस दियारे पाक (या'नी मुबारक शह्‌र मदीनए पाक) से तशरीफ़ ला रहे हैं, येह इमामा आप के क़दमों के लाइक़ भी नहीं। अलबत्ता मेरे कपड़ों में सब से बेश क़ीमत (या'नी क़ीमती) एक जुब्बा है, वोह ह़ाज़िर किये देता हूं और काशानए अक़्दस से सुर्ख़ काशानी मख़्मल का जुब्बए मुबारका ला कर अ़ता फ़रमा दिया, जो (उस वक़्त के) डेढ़ सो रुपै से किसी त़रह़ कम क़ीमत का न होगा। मौलाना मम्दूह़ (या'नी शाह अ़ब्दुल अ़लीम मेरठी رحمۃ اللہ علیہ) ने खड़े हो कर दोनों हाथ फैला कर ले लिया। आंखों से लगाया, लबों से चूमा, सर प रखा और सीने से देर तक लगाए रहे।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/132 ता 134 मुलख़्ख़सन, मक्तबतुल मदीना)

उस मन्क़बत के चन्द अश्आ़र येह हैं :

तुम्हारी शान में जो कुछ कहूं उस से सिवा तुम हो
क़सीमे जामे इरफ़ान ऐ शहे अह़मद रज़ा तुम हो
जो मर्कज़ है शरीअ़त का मदार अहले त़रीक़त का
जो मह़्वर है ह़क़ीक़त का वोह क़ुत़्बुल औलिया तुम हो
यहां आ कर मिलीं नहरें शरीअ़त और त़रीक़त की
है सीना मज्मउ़ल बह़रैन ऐसे रहनुमा तुम हो
"अ़लीमे" ख़स्ता इक अदना गदा है आस्ताने का
करम फ़रमाने वाले ह़ाल पर इस के शहा तुम हो

(याद रहे कि बा'ज़ लोगों के लिये अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना जाइज़ होता है, येह "अपनी ता'रीफ़ पर फूलने" में शामिल नहीं।)

ख़्वाहिशे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ ने मौलाना इरफ़ान बेसल पूरी رحمۃ اللہ علیہ को एक ख़त़ लिखा जिस के आख़िर में कुछ यूं लिखते हैं : वक़्ते मर्ग (या'नी इन्तिक़ाल का वक़्त) क़रीब है और अपनी ख़्वाहिश येही है कि

मदीनए त़य्यिबा में ईमान के साथ मौत और बक़ीए़ मुबारक में ख़ैर के साथ दफ़्न (Burial) नसीब हो। (मक्तूबाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 202 मुल्तक़त़न)

सायए दीवारो ख़ाके दर हो या रब और रज़ा ख़्वाहिशे दैहीमे क़ैसर, शौक़े तख़्ते जम नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, मक्बतुल मदीना)

शर्ह़े कलामे रज़ा : या अल्लाह पाक! तेरे प्यारे प्यारे और आख़िरी नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के क़दमों में मदीनए पाक में मुझे मद्फ़न नसीब हो जाए, मुझे रूम और ईरान के बादशाहों के तख़्तो ताज की कोई ज़रूरत नहीं।

है येही अ़त्तार की ह़ाजत मदीने में मरे हो इ़नायत सय्यिदा, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

कलामे आ'ला ह़ज़रत की शान

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का कलाम क़ुरआनो ह़दीस के ऐ़न मुत़ाबिक़ है और इस में भी शक नहीं कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की लिखी हुई एक एक ना'त फ़न्ने शाइ़री (Poetic Skills) में भी दरजए कमाल पर है। **अल्लाह** पाक के सच्चे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़बबत से आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के जिस्म का रुवां रुवां लबरेज़ था, इसी त़रह़ आप की ना'तिया शाइ़री का हर हर लफ़्ज़ भी इ़श्क़े रसूल में डूबा हुवा नज़र आता है। आज तक़्रीबन सो साल गुज़रने के बा वुजूद भी आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के लिखे हुए अश्आ़र दिलों में इ़श्क़े रसूल पैदा करते और यादे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में तड़पा देते हैं।

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के अ़रबी अश्आ़र की मज्मूई़ ता'दाद मुख़्तलिफ़ अक़्वाल के मुत़ाबिक़ 751 या 1145 है। (मौलाना इमाम अह़मद रज़ा की ना'तिया शाइ़री, स. 210) जब कि अ़रबी ज़बान में से **क़सीदताने राइअ़तान** मश्हूर **''कलाम''** हैं जो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने 1300 हि. में आ़लिमे कबीर

मौलाना शाह फ़ज़्ले रसूल बदायूनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के सालाना उ़र्से मुबारक के मौक़अ़ पर 27 साल 5 माह की उ़म्र में पेश किये थे। अस्ह़ाबे बद्र की निस्बत से दोनों क़सीदे 313 अश्आ़र पर मुश्तमिल हैं। दोनों मुबारक क़सीदों में क़ुरआनो ह़दीस के इशारात और अ़रबी इम्साल व मुह़ावरात का ख़ूब इस्ति'माल किया गया है। मश्हूरे ज़माना ना'तिया किताब **''ह़दाइक़े बख़्शिश''** में एक क़ौल के मुत़ाबिक़ 2781 अश्आ़र हैं। और उर्दू कलाम का अ़रबी तरजमा भी **''सफ़्वतुल मदीह़''** के नाम से प्रिन्ट हो चुका है। (اثر القرآن والسنۃ فی شعر الامام احمد رضا خان، ص49،50، المؤسسۃ الجلالیہ)

गूंज गूंज उठे हैं नग़माते रज़ा से बोस्तां क्यूं न हो किस फूल की मिदह़त में वा मिन्क़ार है

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! अगर येह कहा जाए कि आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के तरजमए क़ुरआन ''कन्ज़ुल ईमान'' की त़रह़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ना'तिया शाइ़री को अ़वाम में आ़म करने में दा'वते इस्लामी का बहुत बड़ा किरदार है तो बे जा न होगा। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ वक़्तन फ़ वक़्तन ख़ुद ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' के अश्आ़र पढ़ते हैं और ना'त ख़्वानों को भी आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का कलाम पढ़ने की तरग़ीब दिलाते रहते हैं। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! दा'वते इस्लामी के शो'बए तस्नीफ़ो तालीफ़ ''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'' में काम होने के बा'द ''मक्तबतुल मदीना'' से ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' की प्रिन्टिंग का सिल्सिला जारी है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! अगस्त 2020 तक तरजमए क़ुरआन ''कन्ज़ुल ईमान'' के कमो बेश दो लाख और ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' के एक लाख तेरह हज़ार तीन सो इक्सठ नुस्ख़े प्रिन्ट हो चुके हैं।

मौला बहरे ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' बख़्श अ़त्तार को बिला पुरसिश
ख़ुल्द में कहता कहता जाएगा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से हर साल क़ुरबानी

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने बारे में फ़रमाते हैं : फ़क़ीर का मा'मूल है कि क़ुरबानी हर साल अपने ह़ज़रत वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की त़रफ़ से करता है और उस का गोश्त पोस्त (या'नी खाल) सब तसद्दुक़ (या'नी सदक़ा) कर देता है और एक क़ुरबानी हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ से करता है और उस का गोश्त पोस्त सब नज़्रे ह़ज़राते सादाते किराम करता है। تَقَبَّلَ اللہُ تَعَالٰی مِنِّی وَمِنَ الْمُسْلِمِیْنَ، اٰمین (या'नी **अल्लाह** पाक मेरी और सब मुसल्मानों की त़रफ़ से क़बूल फ़रमाए, आमीन।) (फ़तावा रज़विय्या, 20/256, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

ग़रीब सादाते किराम से मह़ब्बते आ'ला ह़ज़रत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ सादाते किराम का बहुत ख़याल फ़रमाते, यहां तक कि जब कोई चीज़ तक़्सीम फ़रमाते तो सब को एक एक अ़त़ा फ़रमाते और सय्यिद साहि़बान को दो देते। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं कहता हूं : बड़े माल वाले अगर अपने ख़ालिस मालों से बत़ौरे हदिय्या इन ह़ज़राते उ़ल्या (या'नी बुलन्द मर्तबा साहि़बान) की ख़िदमत न करें तो इन (मालदारों) की (अपनी) बे सआ़दती है, वोह वक़्त याद करें जब इन ह़ज़रात (या'नी सादाते किराम) के जद्दे अकरम (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सिवा ज़ाहिरी आंखों को भी कोई मल्जा व मावा (या'नी पनाह का ठिकाना) न मिलेगा, क्या पसन्द नहीं आता कि वोह माल जो इन्हीं के सदक़े में उन्हीं की सरकार (या'नी बारगाह) से अ़त़ा हुवा, जिसे अ़न्क़रीब छोड़ कर फिर वैसे ही ख़ाली हाथ ज़ेरे ज़मीन (या'नी क़ब्र में) जाने वाले हैं, उन की ख़ुशनूदी के लिये उन के पाक मुबारक बेटों (या'नी सय्यिदों) पर उस का एक हि़स्सा सर्फ़ (या'नी ख़र्च) किया करें कि उस सख़्त ह़ाजत

के दिन (या'नी बरोज़े क़ियामत) उस जवाद करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भारी इन्आ़मों, अ़ज़ीम इक्रामों से मुशर्रफ़ हों।

सय्यिद के साथ भलाई करने का अ़ज़ीम सिला

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मेरे अहले बैत (Descendants) में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का बदला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा।

(الجامع الصغیر للسیوطی، ص ۵۳۳، حدیث: ۸۸۲۱، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्तलिब में किसी के साथ दुन्या में नेकी करे उस का सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा।

(تاریخ بغداد، ۱۰/ ۱۰۲، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिद से भलाई करने वाले को क़ियामत में आक़ा की ज़ियारत होगी

अल्लाहु अक्बर ! अल्लाहु अक्बर ! क़ियामत का दिन, वोह क़ियामत का दिन, वोह सख़्त ज़रूरत सख़्त ह़ाजत का दिन, और हम जैसे मोह़ताज, और सिला अ़ता फ़रमाने को मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सा साह़िबुत्ताज, ख़ुदा जाने क्या कुछ दें और कैसा कुछ निहाल फ़रमा दें, एक निगाहे लुत्फ़ उन की जुम्ला मुहिम्माते दो जहां को (या'नी दोनों जहां की तमाम मुश्किलात के ह़ल के लिये) बस है, बल्कि ख़ुद येही सिला (बदला) करोड़ों सिले (बदलों) से आ'ला व अन्फ़स (या'नी नफ़ीस तरीन) है, जिस की त़रफ़ कलिमए करीमा, اِذَا لَقِيَنِی (जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा) इशारा फ़रमाता है, ब लफ़्ज़े "اِذَا" ता'बीर फ़रमाना (या'नी "जब" का लफ़्ज़ कहना) بِحَمْدِ اللهِ रोज़े क़ियामत वा'दए विसाल व दीदारे

महबूबे ज़िल जलाल का मुज़्दा सुनाता है। (गोया सय्यिदों के साथ भलाई करने वालों को क़ियामत के रोज़ ताजदारे रिसालत صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की ज़ियारत व मुलाक़ात की खुश ख़बरी है) **मुसल्मानो ! और क्या दरकार है ? दौड़ो और इस दौलतो सआदत को लो।** (फ़तावा रज़विय्या, 10/105 ता 106)

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे, वासिता अहले बैते पाक का फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की चन्द ख़ूबियां

(1) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पांचों नमाज़ें बा जमाअत तक्बीरे ऊला के साथ मस्जिद में अदा फ़रमाया करते। (2) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को इल्मे तौक़ीत (या'नी वोह इल्म जिस के ज़रीए दुरुस्त वक़्त मा'लूम किया जाए) इस क़दर कमाल हासिल था कि दिन को सूरज और रात को सितारे देख कर घड़ी मिला लेते कभी एक मिनट का भी फ़र्क़ न हुवा। (3) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने और अपने भाइयों के तमाम शहज़ादों (या'नी बेटों) का नाम "मुहम्मद" रखा। (4) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को तब्अन हर मश्रूब से ज़ियादा अज़ीज़ "ज़मज़म शरीफ़" महबूबो मरग़ूब (या'नी पसन्दीदा) था। (5) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखीं, जिन में से चन्द येह हैं : इल्मुल अक़ाइद में 31, इल्मुल कलाम में 17, इल्मे तफ़्सीर में 6, इल्मे हदीस में 11, उसूले फ़िक़्ह में 9, फ़िक़्ह में 150, इल्मुल फ़ज़ाइल में 30, इल्मुल मनाक़िब में 18, और इल्मे मुनाज़रा में 18। (6) आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ग़रीबों की दा'वत क़बूल फ़रमा लेते थे अगर वहां आप के मिज़ाज के मुताबिक़ खाना न होता तो मेज़बान (Host) पर इस का इज़्हार न फ़रमाते बल्कि ख़ुशी ख़ुशी खा लेते। (हयाते आ'ला हज़रत, 1/123 मुलख़्ख़सन) (7) हमेशा ग़रीबों की इमदाद करते, उन्हें कभी ख़ाली हाथ न लौटाते बल्कि आख़िरी वक़्त भी रिश्तेदारों

को वसिय्यत फ़रमाई कि ग़रीबों का ख़ास ख़याल रखना, उन को ख़ातिर दारी से अच्छे अच्छे और लज़ीज़ खाने अपने घर से खिलाया करना और किसी ग़रीब को बिल्कुल न झिड़क्ना। (तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 14) (8) कार्ड या खुले ख़त़ (Letter) में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم या आयते करीमा या इस्मे जलालत "**अल्लाह**" या **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी "मुह़म्मद" (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मुबारक नाम या दुरूद शरीफ़ बे अदबी के ख़याल से लिखने से मन्अ़ फ़रमाते। आ'दादे "بِسْمِ اللّٰه" 786 दाईं त़रफ़ से लिखते। (9) मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में शुरूअ़ से आख़िर तक अदबन दो ज़ानू (जैसे नमाज़ में अत्तह़िय्यात की सूरत में बैठते हैं) बैठे रहते, सिर्फ़ सलातो सलाम पढ़ने के लिये खड़े होते। यूं ही बयान फ़रमाते और चार पांच घन्टे तक मुकम्मल दो ज़ानू ही मिम्बर शरीफ़ पर तशरीफ़ फ़रमा रहते। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/98)

काश ! हम ग़ुलामाने आ'ला ह़ज़रत को भी तिलावते क़ुरआन करते या सुनते वक़्त नीज़ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात, मदनी मुज़ाकरात, दर्स व मदनी ह़ल्क़ों वग़ैरा में अदबन दो ज़ानू बैठने की सआ़दत मिल जाए। (10) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का सोने का अन्दाज़ भी बड़ा ईमान अफ़रोज़ था, अ़ाम लोगों की त़रह़ न सोते बल्कि सोते वक़्त हाथ के अंगूठे (Thumb) को शहादत की उंगली पर रख लेते ताकि उंग्लियों से लफ़्ज़ "**अल्लाह** (اللّٰه)" बन जाए और पाउं फैला कर कभी न सोते बल्कि सीधी करवट (Right Side) लैट कर दोनों हाथों को मिला कर सर के नीचे रख लेते और पाउं मुबारक समेट लेते, इस त़रह़ जिस्म से लफ़्ज़ "मुह़म्मद (محمد)" बन जाता। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/99 मफ़्हूमन) (11) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه वाक़ेई फ़नाफ़िर्रसूल थे। अक्सर फ़िराक़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें (Sigh) भरा करते। (12) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने सारी ज़िन्दगी कोई भी सुब्ह़ ऐसी नहीं की जो नामे

इलाही से शुरूअ़ न होती हो और किसी भी दिन की आख़िरी तह़रीर दुरूद शरीफ़ के सिवा किसी और लफ़्ज़ पर ख़त्म नहीं फ़रमाई, सब से आख़िरी तह़रीर 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हि. को वफ़ात शरीफ़ से चन्द लम्ह़े पहले येह लिखी :

وَاللّٰہُ شَہِیۡدٌ وَّلَہُ الۡحَمۡدُ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی وَ بَارَکَ وَسَلَّمَ عَلٰی شَفِیۡعِ الۡمُذۡنِبِیۡنَ وَ اٰلِہٖ الطَّیِّبِیۡنَ وَصَحۡبِہِ الۡمُکَرَّمِیۡنَ وَ ابۡنِہٖ وَحِزۡبِہٖ اِلٰی اَبَدِ الۡاٰبِدِیۡنَ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 3/292 मुलख़्ख़सन)

इन्तिक़ाल शरीफ़

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ ने अपनी वफ़ात शरीफ़ से 4 माह 22 दिन पहले ख़ुद अपने इन्तिक़ाल शरीफ़ की ख़बर दे दी थी, आप ने अपने साह़िब ज़ादे ह़ुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ को अपनी ह़यात (या'नी मुबारक ज़िन्दगी) ही में अपना जा नशीन (Successor) मुक़र्रर फ़रमाया और अपनी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की वसिय्यत फ़रमाई चुनान्चे अ़ल्लामा मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ ने ही आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई । (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए सिवुम, स. 297 मुलख़्ख़सन) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़श्र तक जारी रहेगा फ़ैज़ मुर्शिद आप का फ़ैज़ का दरिया बहाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
है ब दरगाहे ख़ुदा अ़त्तारे आ़जिज़ की दुआ़ तुझ पे हो रह़मत का साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूदे पाक के बारे में तह़क़ीक़े रज़ा	1	मदीने से मह़ब्बत	9
एक घूंट पानी	4	ग़रीब सादाते किराम से मह़ब्बते आ'ला ह़ज़रत	13
जन्नत की त़रफ़ पहल करने वाला	6		
सात पहाड़	8	आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ की चन्द ख़ूबियां	15
ह़दीस शरीफ़ पढ़ाने का अन्दाज़े मुबारक	9		